Sub- Learning & Teaching Date- 22.07.20

Topic- Learning From Psychology

Presented by Sujeet kumar Depart. of Edu. P.Sc. College Madhepura.

❖ मनोविज्ञान के द्वारा अधिगम समझने के लिये मनोविज्ञान को समझना आवश्यक है :–

शिक्षा मानव जीवन को सार्थक, उपयोगी एवं लक्ष्यकेन्द्रित बनाने की दृष्टि से उसमे कुछ गुणों को विकसित करने की प्रकिया है। शिक्षा के द्वारा ही मानव की अन्तर्निहित योग्याताओं को विकसित करके समाजसम्मत बनाया जाता है। पूर्व शिक्षा का स्वरूप केवल सूचना प्रदान करना था। परन्तु सूचना कान्ति के इस युग मं शिक्षा एवं शैक्षिक प्रकिया दोनों के अर्थ बदल रहें हैं। बदलती परिस्थितियों में शिक्षा व्यक्ति केन्द्रित होती जा रही है जिससे सुखद समाज के निर्माण में बाधा आ रही है। इसी लिए शिक्षा को सार्थक, उपयोगी एवं लक्ष्यकेन्द्रित बनाने हेतु शिक्षा मनोविज्ञान को सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है। आज शिक्षा का अर्थ बालक को केवल सूचना प्रदान करना ही नहीं समझा जाता है बल्कि मनोवज्ञानिक दृष्टि से शिक्षा शब्द को व्याख्या की जाती है जिसके अनुसार शिक्षा का कार्य बालक के व्यक्तित्व का स्वाभाविक एवं संतुलित विकास करना है। मनोविज्ञान की सहायता से ही शिक्षा प्रकिया को अधिक रोचक व उपयोगी बनाया जा सकता है और शिक्षण संबंधि समस्याओं का समाधान भी किया जा सकता है। इसमें संदेह नहीं है कि शैक्षिक जगत के लिए शिक्षा मनोविज्ञान विषय, एक वरदान के रूप में सिद्ध हुआ है। प्रत्येक शिक्षक के लिए इस विषय का ज्ञान न केवल अपेक्षित वरन् अनिवार्य है।

मनोविज्ञान की विकास की लम्बी यात्रा के दौरान मनोवैज्ञानिक एवं मनीषियों ने चिन्तन–मनन किया तथा मनोविज्ञान के स्वरूप को निर्धारित किया। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान की परिभाषाओं को रचना की। कुछ परिभाषायें इस प्रकार हैं:–

- वाटसन– ''मनोविज्ञान व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।''("Psychology is the science of behavior and experience")

- वुडवर्थ– ''मनोविज्ञान वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति के कियाकलापों का वैज्ञानिक अध्ययन है।''("Psychology is the scientific study of the activities of the individual in relation to his environment")
- स्किनर– ''मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।''("Psychology is the science of behavior and experience")
- पिल्सबरी– ''मनोविज्ञान की सबसे सन्तोषजनक परिभाषा, मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।''("Psychology may be most satisfactorily defined as the science of human behavior")

यदि हम इनके विशेषताओं को देखें तो यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो न केवल मानव वरन् पशुओं के व्यवहार का भो अध्ययन करता है तथा इस अध्ययन के अन्तर्गत व्यवहार के उन समस्त पहलूओं को सम्मिलित किया जाता है जो व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक एवं संवेगात्मक पक्ष से प्रभावित होते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि अधिगम तथा मनोविज्ञान एक–दूसरे के पूरक है, क्योंकि मनोविज्ञान व्यवहार की व्याख्या करता है तथा इसके सम्बन्धित कारकों का पता लगाता है और अधिगम व्यवहार में आने वाले स्थायी परिवर्तनों की संज्ञा है। अतः अधिगम हेतु एक शिक्षक के छात्र को मनोविज्ञान का पूर्व ज्ञान होना चाहिये कि छात्र का विकास किस प्रकार होता है? उसकी क्या रूचिया है ? विशेष आयु स्तर पर उसका अधिगम किस प्रकार कराया जा सकता है ? आदि।

इस प्रकार हम मनोविज्ञान को अधिगम का मुख्य आधार मानते हैं क्योंकि अधिगम छात्र केन्द्रित होना चाहिये और छात्र के विषय में सम्पूर्ण जानकारी केवल मनोविज्ञान द्वारा ही होती है।